

नवभारत

संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

इंदौर के कलेक्टर शिवम वर्मा ने बुधवार को प्रशासनिक संकुल में एक बैठक आयोजित कर स्कूल और कॉलेजों के छात्रों की सुरक्षा और सुविधा के लिए अनेक कदम सखी से उठने के निर्देश दिए हैं. यदि इन निर्देशों का कड़ाई से पालन किया गया तो निश्चित रूप से यह मॉडल पूरे प्रदेश के लिए नजीर बनेगा. दरअसल इंदौर प्रशासन द्वारा स्कूली बच्चों की सुरक्षा को लेकर अनेक कदम उठाए जा चुके हैं. बल्कि इन्हें पूरे प्रदेश में एक आदर्श मॉडल के रूप में लागू किया जाना चाहिए. जिस तरह कलेक्टर शिवम वर्मा ने स्कूल बच्चों, ड्राइवर्स, प्रबंधन और कॉलेज परिसरों तक के लिए सख्त दिशा-निर्देश जारी किए हैं, वह इस बात का संकेत है कि अब शिक्षा के साथ-साथ सुरक्षा को भी समान प्राथमिकता देने का समय आ गया है. आज के दौर में अभिभावकों की सबसे बड़ी चिंता यही होती है कि उनका बच्चा घर से स्कूल

पूरे प्रदेश में लागू हो यह इंदौर मॉडल

तक और वापस सुरक्षित पहुंचे. कई बार लापरवाही, ओवरलोडिंग, बिना फिटनेस वाले वाहन और अनुभवहीन चालकों के कारण हादसे सामने आते रहे हैं. ऐसे में इंदौर मॉडल एक व्यवस्थित और जवाबदेह ढांचा प्रस्तुत करता है. बसों में स्प्रीड गवर्नर, जीपीएस और सीसीटीवी कैमरों की अनिवार्यता न केवल निगरानी को मजबूत करेगी, बल्कि किसी भी आपात स्थिति में त्वरित कार्रवाई को भी संभव बनाएगी. फर्स्ट-एड बॉक्स, अग्निशमन यंत्र और इमरजेंसी निकास जैसे प्रावधान बच्चों की सुरक्षा के प्रति प्रशासन की गंभीरता को दर्शाते हैं. इसी तरह ड्राइवर्स के लिए न्यूनतम अनुभव, आपराधिक रिकॉर्ड की जांच और महिला परिवारालय की व्यवस्था जैसे निर्देश सामाजिक संवेदनशीलता और व्यावहारिकता का संतुलन

स्थापित करते हैं. छात्राओं की सुरक्षा के संदर्भ में यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है. ओवरलोडिंग पर सख्त रोक और वाहन चलाते समय मोबाइल के उपयोग पर प्रतिबंध जैसे कदम सड़क सुरक्षा के बुनियादी सिद्धांतों को मजबूत करते हैं, जिन्हें अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है. कॉलेज परिसरों में नशे की बढ़ती प्रवृत्ति पर निगरानी समितियों का गठन भी इस मॉडल का एक महत्वपूर्ण पहलू है. शिक्षा का वातावरण तभी स्वस्थ रह सकता है जब वह नशामुक्त और अनुशासित हो. यह पहल युवाओं को सही दिशा देने की दिशा में एक सकारात्मक प्रयास है. सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि इस पूरी व्यवस्था में अभिभावकों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ न डालने की भी स्पष्ट मंशा दिखाई देती है. यूनिफॉर्म और किताबों को लेकर एकाधिकार

खत्म करने की बात पारदर्शिता और निष्पक्षता की दिशा में एक अहम कदम है. अब आवश्यकता इस बात की है कि प्रदेश सरकार इस इंदौर मॉडल का गहन अध्ययन कर इसे आगामी शैक्षणिक सत्र से सभी जिलों में लागू करे. इसके लिए एक समान गाइडलाइन तैयार की जाए, नियमित निरीक्षण की व्यवस्था हो और उल्लंघन पर कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए. साथ ही, अभिभावकों और स्कूल प्रबंधन के बीच संवाद को भी मजबूत किया जाना चाहिए, ताकि यह व्यवस्था केवल कामगोष्ठ तक सीमित न रहकर जमीन पर प्रभावी रूप से लागू हो. यदि इस मॉडल को प्रदेशव्यापी रूप दिया जाता है, तो यह न केवल बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करेगा, बल्कि शिक्षा प्रणाली में विश्वास को भी मजबूत करेगा. सुरक्षित वातावरण में ही बेहतर भविष्य की नींव रखी जा सकती है, और इंदौर ने इस दिशा में एक सशक्त शुरुआत कर दी है.

ट्रेक से संसद तक

महिलाओं को भारत का नेतृत्व करना चाहिए



डॉ. पी टी ऊषा

अब है कार्यवाही का वक्त - राज्यसभा में सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त करने के बाद, मैंने प्रत्यक्ष रूप से देखा है कि कैसे विविध दृष्टिकोण बहस और निर्णय लेने की प्रक्रिया को मजबूत बनाते हैं. फिर भी, आज लोकसभा में महिलाओं की हिस्सेदारी केवल लगभग 15 प्रतिशत है, जो वैश्विक औसत से काफी कम है. नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित हो चुका है. अब बस इसे पूरी तरह, निष्पक्ष और बिना देर किए लागू करने की राजनीतिक इच्छाशक्ति की जरूरत है. भारत अपनी आधी आबादी को सर्वोच्च निर्णय लेने वाले निकायों में कम प्रतिनिधित्व देते हुए, विकसित राष्ट्र बनने की आकांक्षा नहीं रख सकता. आधी प्रतिभा को दरकिनार करके विकसित भारत का निर्माण नहीं किया जा सकता, न ही आधी आवाज पर सच्चा लोकतंत्र फल-फूल सकता है. आगे का रास्ता साफ है. सवाल यह है कि क्या हम उस पर चलने का दृढ़ संकल्प रखते हैं.

मैंने अपना पूरा जीवन भागदौड़ में ही बिताया है, पहले केरल की कच्ची सड़कों पर, फिर वैश्विक मंचों पर और अब सार्वजनिक जीवन के गलियारों में. हर कदम पर मुझे कई मुश्किलों का सामना करना पड़ा है, कुछ प्रत्यक्ष और कुछ अनकही बाधाओं का भी, जिन्होंने महिलाओं को यह बताया कि उनका यहाँ कोई स्थान नहीं है. मैंने यह भी देखा है कि जब ये बाधाएं टूटने लगती हैं तो क्या होता है. अवसर परिणामों को बदल देता है और इससे भी ज़रूरी बात यह है कि वह लोगों को सोच को बदल देता है. यही कारण है कि संविधान (एक सौ अट्ठाईसवां संशोधन) विधेयक, 2023-नारी शक्ति वंदन अधिनियम-केवल एक विधायी उपलब्धि नहीं है. यह एक लंबे समय से प्रतीक्षित संरचनात्मक सुधार है. लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित करना न तो कोई रियायत है और न ही दिखावा. यह अधिक प्रतिनिधि और प्रभावी लोकतंत्र की दिशा में एक ज़रूरी कदम है.

लिया और कुछ ही सेकंड के अंतर से पदक से चूक गई, तब बहुत कम भारतीय लड़कियां थीं. लेकिन पिछले कई दशकों में यह स्थिति बदली है. प्रशिक्षण, बुनियादी ढांचे और पहचान तक पहुंच में सुधार के साथ, भारतीय महिलाएं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रमुखता हासिल करने लगी हैं. पी.वी. सिंधु, मोरारबाई चानू, विनेश फोगाट और मैरी कॉम जैसी एथलीटें अकेले नहीं उभरीं. वे एक ऐसी व्यवस्था का परिणाम हैं, जिसने धीरे-धीरे ही सही, पहुंच को व्यापक बनाया शुरू किया. प्रतिनिधित्व आकांक्षाएं पैदा करता है और आकांक्षा, जब समर्थित होती है, तो उपलब्धि दिलाती है. सबक साफ है. जब महिलाओं को स्थान दिया जाता है, तो वे व्यवस्था में केवल भाग नहीं लेतीं, वे शानदार प्रदर्शन भी कर दिखाती हैं.

हर भारतीय के लिए बेहतर शासन- भारत में जमीनी स्तर पर महिलाओं के नेतृत्व का प्रभाव पहले ही देखा जा चुका है. 73वें संविधानिक संशोधन द्वारा पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण लागू किए जाने के बाद से, विभिन्न राज्यों में किए गए कई अध्ययनों से पता चला है कि महिला प्रतिनिधियों के नेतृत्व वाले क्षेत्रों में पेंशन, स्वच्छता, शिक्षा और प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच में सुधार हुआ है. ये महज महिलाओं के मुद्दे नहीं हैं, बल्कि ये राष्ट्रीय प्राथमिकताएं हैं. महिला नेता अक्सर सुरक्षित सार्वजनिक स्थान, सुचारू रूप से चलने वाले स्कूल, पोषण और स्वास्थ्य सेवाओं जैसी शासन से जुड़ी उन रोजगार की चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करती हैं, जो परिवारों और समुदायों को सीधे तौर पर प्रभावित करती हैं. इस प्रतिनिधित्व को राज्य

विधानसभाओं और संसद तक विस्तारित करना केवल निष्पक्षता की बात नहीं है. यह शासन की गुणवत्ता में सुधार से जुड़ा है. प्रतिनिधित्व का आर्थिक महत्व- भारत में महिला श्रम बल की भागीदारी विश्व में सबसे कम है, जो लगभग 25 प्रतिशत के आसपास है. यह केवल एक सामाजिक चिंता नहीं, बल्कि एक आर्थिक समस्या भी है. विधानसभाओं में महिलाओं का अधिक प्रतिनिधित्व उन नीतियों को प्राथमिकता देने में मदद कर सकता है, जो इस अप्रयुक्त क्षमता को उजागर करती हैं, जैसे किफायती बाल देखभाल, सुरक्षित कार्यस्थल, ऋण तक पहुंच और महिला उद्यमियों के लिए समर्थन. मैकिन्से ग्लोबल इंस्टीट्यूट का अनुमान है कि लैंगिक समानता को बढ़ावा देने से भारत की जीडीपी में 700 बिलियन डॉलर तक की वृद्धि हो सकती है. अधिक समावेशी संसद न केवल एक लोकतांत्रिक आवश्यकता है, बल्कि एक आर्थिक अनिवार्यता भी है. सुरक्षा, गरिमा और भागीदारी- भारत भर में लाखों महिलाओं के लिए, सार्वजनिक जीवन में भागीदारी अभी भी सुरक्षा, भेदभाव और असमान पहुंच की चिंताओं से प्रभावित है. चाहे खेल हो, शिक्षा हो या कार्यस्थल, ये समस्याएं हमारे समाज में गहराई से जड़े जमा चुकी हैं. (लेखक राज्यसभा सांसद, भारतीय ओलंपिक संघ की अध्यक्ष और राष्ट्रमंडल खेल संघ, भारत की अध्यक्ष हैं.)

पहलगाय से जुड़े प्रश्न अब भी अनुत्तरित

एक वर्ष पूर्व पहलगाय में पर्यटकों के नाम व धर्म पूछकर की गई नृशंस हत्या को देशवासी कभी भुला नहीं सकते. अभी भी इस हमले के घाव भरे नहीं हैं. इस आतंकी हमले से जुड़े कुछ प्रश्न अभी भी अनुत्तरित हैं जैसे कि बेसन वैली में पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था क्यों नहीं थी? आतंकीवादी कहाँ से आ पहुँचे थे और उन्हें किसकी मदद थी? इस नरसंहार की साजिश पाकिस्तान ने रची थी जिसके आतंकी ठिकानों को 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत नेहलानाबूत कर भारत ने कराया जवाब दिया था. भारत ने हमेशा यह रुख कायम रखा कि हमारी लड़ाई आतंकीवाद से है और ऐसे दरिंदों को वह घर में सुरक्षित मारना. ऑपरेशन सिंदूर के पहले चरण में पाकिस्तान के अनेक आतंकी ठिकाने नष्ट किए गए और दूसरे चरण में लगभग 10 पाकिस्तानी एयरबेस तबाह किए गए. पाकिस्तानी डीजीएमओ के संघर्ष विराम प्रस्ताव को भारत ने स्वीकार किया था क्योंकि चुने हुए लक्ष्यों को निशाना बनाने का उद्देश्य उसने हासिल कर लिया था. इस संघर्ष को रोकवाने का श्रेय अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप लेते रहे लेकिन भारत ने यही कहा कि दोनों देशों के सैन्य अधिकारियों ने आपसी सहमति से संघर्ष रोका. भारतीय मिसाइल हमले से जो



आतंकी मारे गए उनके जनाजे में आतंकी सरगनाओं के साथ पाकिस्तान के बड़े सैनिक अपसर भी शामिल हुए थे. यह स्पष्ट प्रमाण है कि पाकिस्तानी फौज की आतंकियों से मिलीभगत है. आतंकीवाद पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है. आतंकीवादी स्थानीय युवकों की भती करते हैं और अपने स्लीपर सेल को सक्रिय कर रहे हैं. हमले को अंजाम देने हैं. दिल्ली व यूपी के डॉक्टरों के आतंकीवादियों से संबंध थे. कश्मीर में दीर्घकालीन स्थिरता व शांति के लिए केवल सुरक्षा नीति पर्याप्त नहीं है. वहां राजनीतिक संवाद और विश्वास बहाल करते हुए स्थानीय लोगों को रोजगार देना भी जरूरी है. पाकिस्तान की दुम कभी सीधी नहीं होगी. वह हर फोरम पर कश्मीर की रट लगाता है. चीन और अमेरिका उसके मददगार बने हुए हैं. सकंठी अब भी उसे भारी आर्थिक सहायता देता है. आतंकीवाद को बढ़ावा देने वाले पाकिस्तान के सेनाध्यक्ष मुनीर को ट्रंप महान वीर मानते हैं. पाकिस्तान पर जरा भी भरोसा नहीं किया जा सकता. भारत ने ऑपरेशन सिंदूर स्थापित किया है, खत्म नहीं किया है. पाक ने यदि आगे कोई इस्तेमाल किया तो भारत को निर्णायक तरीके से उसको सबक सिखाना होगा.

मुरली मनोहर ने पते की बात कही हम पहले थे विश्वगुरु, अब नहीं

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, आपको याद होगा कि सक्रिय राजनीति से पूरी तरह रिटायर कर देने के लिए बीजेपी ने अपने 2 वरिष्ठ नेताओं लालकृष्ण आडवाणी और डॉ. मुरलीमनोहर जोशी को परामर्शदाता मंडल में भेज दिया था. यह बीजेपी का एक तरह का वृद्धाश्रम है. आडवाणी 98 वर्ष और जोशी 92 वर्ष के हो चुके हैं.' हमने कहा, 'लोग अपने घर और कुल को परंपराओं व रीतिरिवाजों के बारे में बड़े-बूढ़ों से ही तो पूछते या परामर्श लेते हैं कि बताओ दादा ऐसी परिस्थिति में क्या करना चाहिए? बुजुर्गों का अनुभव और जवानों का जोश दोनों काम की चीज हैं.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, बीजेपी के परामर्शदाता पूरी तरह बैकग्राउंड या नेपथ्य में चले गए. उनसे कोई परामर्श नहीं लेता. इसकी जरूरत भी महसूस नहीं की जाती, लेकिन अब एक परामर्शदाता मुरलीमनोहर जोशी ने बिना मांगे परामर्श दिया है और प्रधानमंत्री मोदी के इस बयान में करेक्शन किया है कि भारत विश्वगुरु है. जोशी का कहना है कि भारत कभी विश्वगुरु था, लेकिन अब नहीं है.



बीजेपी में रहकर मोदी के बयान को गलत बताया पानी में रहकर मगर से बहर करने के समान है. हमने कहा, 'ऐसा गर्मजोशीभरा बयान देकर जोशी खतरों में आ गए, वरना लोग तो उन्हें भूल ही गए थे. राजनीति में उगते सूरज को सब सलाम करते हैं लेकिन डूबते सूरज को कोई नहीं देखता. जोशी का तात्पर्य समझिए, जब भारत विश्वगुरु था तो उसने समूची दुनिया को शून्य का आंकड़ा और दशमलव प्रणाली दी थी. हमारे वैज्ञानिक व गणितज्ञ आर्य भट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त आदि थे. पाणिनी का व्याकरण आज तक पढ़ाया जाता है. मंडन मिश्र के यहां पले तोता-मैना संस्कृत में वातालाप करते थे. उनकी पत्नी भारती देवी संस्कृत का अवतार मानी जाती थी, जिन्होंने जगद्गुरु आदि शंकराचार्य से शास्त्रार्थ किया था. हमारे देश में नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय थे, जहां पढ़ने विदेश से लोग आया करते थे. काव्यका क अर्थशास्त्र आज भी प्रसिद्ध है. आज हमारे 200 विश्वविद्यालयों में से कोई भी ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज, हार्वर्ड, येल, स्टैनफोर्ड जैसी यूनिवर्सिटी की बराबरी नहीं करता. विदेशी आक्रमणकारियों ने नालंदा विश्वविद्यालय को जला दिया था, जहां इतने ग्रंथ थे कि 6 महीने तक आग जलती रही.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, जिस दुनिया में ट्रंप जैसे सनकी और ईरान जैसा अडिगल हो और आर्किस्तान का मुनीर शांतिवादी कर रहा हो वहां भारत की विश्वगुरु की भूमिका कहाँ रह जाती है? जोशी सही कह रहे हैं. हम पहले विश्वगुरु थे, अभी नहीं हैं. इसलिए अपने मुंह मियां मिट्टू नहीं बनना चाहिए.'

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, आपको याद होगा कि सक्रिय राजनीति से पूरी तरह रिटायर कर देने के लिए बीजेपी ने अपने 2 वरिष्ठ नेताओं लालकृष्ण आडवाणी और डॉ. मुरलीमनोहर जोशी को परामर्शदाता मंडल में भेज दिया था. यह बीजेपी का एक तरह का वृद्धाश्रम है. आडवाणी 98 वर्ष और जोशी 92 वर्ष के हो चुके हैं.' हमने कहा, 'लोग अपने घर और कुल को परंपराओं व रीतिरिवाजों के बारे में बड़े-बूढ़ों से ही तो पूछते या परामर्श लेते हैं कि बताओ दादा ऐसी परिस्थिति में क्या करना चाहिए? बुजुर्गों का अनुभव और जवानों का जोश दोनों काम की चीज हैं.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, बीजेपी के परामर्शदाता पूरी तरह बैकग्राउंड या नेपथ्य में चले गए. उनसे कोई परामर्श नहीं लेता. इसकी जरूरत भी महसूस नहीं की जाती, लेकिन अब एक परामर्शदाता मुरलीमनोहर जोशी ने बिना मांगे परामर्श दिया है और प्रधानमंत्री मोदी के इस बयान में करेक्शन किया है कि भारत विश्वगुरु है. जोशी का कहना है कि भारत कभी विश्वगुरु था, लेकिन अब नहीं है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्दी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12238 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	4	5
			6	7
8	9	10	11	
	12			
13		14	15	
	16	17	18	19
20	21		22	
23			24	

अनुचित रूप से हजम करना (उर्दू) उपर से नीचे

- खोज, चाह (उर्दू)
- बौना, डिगनापन
- बूढ़ा, दादा, साधु-संन्यासी
- जरी के तार खींचने वाला (उर्दू)
- काशी, वाराणसी
- गुलाम, खरीदा हुआ नौकर
- बयान करना, कहना, जताना
- अंग्रेजी वर्ष का पांचवां महीना (उर्दू)
- फैक्ट्री, अधिक मात्रा में वस्तुएं तैयार करने का स्थान
- पुंछ 15. ईश्वर
- चौजे खरीदकर बेचने का काम
- किसी भी तरह की सवारी, विमान (नी.)
- उत्तम, इस कारण
- नगाना, संख्या, अदद
- जिस समय, जिस वक्त

Solution 12237

क	न	स	र	र	स	द
दा	म	ज	ल	वि	हा	र
हा	स्य	नी	डू	व	क	ना
र	आ	ज	ब	क	ना	
पा	ग	ल	प	न		
ग	र	म	क	वा	य	द
म	न	न	रा	री	प	
न	क्या	व		प्रा	ण	

बाएं से दाएं

- तलवार चलाने वाला व्यक्ति (उर्दू)
- बोरा, थैला, टूटा-फूटा सामान
- ओस, तुषार (उर्दू)
- कमी, न्यूनता (उर्दू)
- स्त्रिय दृष्टि से ध्यानपूर्वक देखना
- एक आंख का, एकआंश
- कसत, बल चढ़ाने के लिए किया जाने वाला शारीरिक परिश्रम
- बीता हुआ, दशा, अवस्था
- खाना और पीना, खाने-पीने का दम
- उत्तर, मुकाबले की चीज, नौकरी से हटाने की आज्ञा
- नगर संबंधी, नगर निवासी
- संबंध रखने वाला
- पराया धन

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में यात्रा का योग है, पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी. मित्र के कारण कार्यों में व्यवधान आयेगा. व्यवसाय में अत्यधिक परिश्रम करना होगा. वर्ष के मध्य में पूर्व निर्धारित कार्यों में रुकावट आयेगी. दाम्पत्य जीवन में कलहपूर्ण स्थिति से बचना चाहिए. वर्ष के अन्त में धन लाभ का योग है. शुभ सूचना प्राप्त होगी. जमीन जायजद में वृद्धि होगी. संबंधों में मधुरता आयेगी. मेघ और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को धन लाभ का योग है. सुखद समाचार प्राप्त होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को यात्रा का योग है. पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी. कर्क राशि के व्यक्तियों को जीवन सुखमय रहेगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को अधिक परिश्रम करना होगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को निर्धारित कार्यों में रुकावट आयेगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मित्र के कारण व्यवधान आ सकता है.

आज जन्म शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ, सुन्दर, एकांतप्रिय, ईमानदार, होमा, परिश्रमी दुष्ट निश्चयी होगा, साहसिक कार्य करने वाला, बुद्धि का तेज होगा, बचपन में स्वास्थ्य कुट्ट नरम गरम रहेगा, बाद में अच्छा स्वास्थ्य रहेगा, आर्थिक स्थिति जीवन भर अच्छी रहेगी.

उत्पत्तिकालीन ग्रह चाल

8	के.7 सू. चं.यु.	6	शु.	5
9				
10		4		
11		1	2	3
12				

पंचांग

रा.मि. 04 संवत् 2083 वैशाख शुक्ल अष्टमी भृगुवासरे रात 11/21, पुष्य नक्षत्रे रात 12/7, धृति योगे प्रातः 7/42 तदुपरि शूल योगे रातअंत 5/7, विष्टि करणें सू.उ. 5/36, सू.अ. 6/24, चन्द्रचार कर्क, शु.रा. 4,6,7,10,11,2 अ.र. 5,8,9,12,1,3 शुभांक- 6,8,2.

वैशाख शुक्ल अष्टमी को पुष्य नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, लोहा, गुड़, खांड, चीनी, मोट, आदि में तेजी होगी, घी, गुड़, जौ, चना, के भाव में नरमी होगी. भाग्यांक 3712 है.

SUDOKU 7370

7	8			2	6		3
		4					
1	3	5		8			
2			1			7	8
6	7			9		2	
				6	5	9	2
2	8	5		3			

वैशाख शुक्ल अष्टमी को पुष्य नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, लोहा, गुड़, खांड, चीनी, मोट, आदि में तेजी होगी, घी, गुड़, जौ, चना, के भाव में नरमी होगी. भाग्यांक 3712 है.